eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का क्षरणः कारण एवं समाधान

डॉ० मालती वर्मा[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, प्रशिक्षण विभाग, ए०एन०डी० कॉलेज, कानपुर उ0प्र0

Received: 21 June 2026 Accepted & Reviewed: 25 June 2026, Published: 30 June 2026

Abstract

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान, कौशल और रोजगार प्राप्त करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी है। किसी भी समाज की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि उसके नागरिक कितने नैतिक, उत्तरदायी और मानवीय मूल्यों से युक्त हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक, तकनीकी एवं बाजारोन्मुख हो गया है। इसके परिणामस्वरूप नैतिक मूल्यों की उपेक्षा बढ़ी है, जिससे विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता, असहिष्णुता, हिंसा, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी तथा मानवीय संवेदनाओं का ह्रास देखने को मिल रहा है। यह शोध–पत्र आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों के क्षरण के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करते हुए उनके व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करता है। अध्ययन का आधार विभिन्न शैक्षिक सिद्धांतों, सामाजिक परिस्थितियों तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा में नैतिकता का समावेश केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रहकर शिक्षण–पद्धति, विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक सहयोग तथा सामाजिक सहभागिता के माध्यम से किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्दः– आधुनिक शिक्षा, नैतिक मूल्य, चरित्र निर्माण, मूल्य शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व, व्यक्तित्व विकास।

Introduction

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास का मूल आधार है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, विवेक, तर्कशक्ति तथा सामाजिक चेतना प्रदान करती है। भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य सदैव चरित्र निर्माण, आत्मविकास तथा समाज कल्याण रहा है। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था में विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, अनुशासन, सेवा, करुणा, सहिष्णुता और आत्मसंयम जैसे नैतिक गुणों का भी प्रशिक्षण दिया जाता था। वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप व्यापक रूप से बदल चुका है। तकनीकी प्रगति, वैश्वीकरण, डिजिटल संस्कृति तथा आर्थिक प्रतिस्पर्धा ने शिक्षा को रोजगारोन्मुख बना दिया है। विद्यार्थी परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करने, प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश लेने तथा आर्थिक सफलता प्राप्त करने को ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानने लगे हैं। इस परिवर्तन ने शिक्षा के नैतिक पक्ष को अपेक्षाकृत कमजोर कर दिया है। आज समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, साइबर अपराध, नशाखोरी, असहिष्णुता, सामाजिक विभाजन, मानसिक तनाव तथा पारिवारिक विघटन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। इन समस्याओं का एक प्रमुख कारण नैतिक मूल्यों का क्षरण माना जाता है। यदि शिक्षा केवल ज्ञान प्रदान करे और चरित्र निर्माण की उपेक्षा करे, तो वह अपने मूल उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सकती। अतः आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुकी है। यह शोध–पत्र इसी आवश्यकता की वैज्ञानिक एवं अकादमिक समीक्षा प्रस्तुत करता है। भारतीय संस्कृति में नैतिकता का विशेष स्थान रहा है। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, बौद्ध एवं जैन दर्शन तथा संत साहित्य सभी ने नैतिक जीवन को मानव विकास का आधार

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

माना है। आधुनिक भारतीय शिक्षाविदों जैसे महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा डॉ. जाकिर हुसैन ने भी शिक्षा में नैतिकता को अनिवार्य बताया है।

महात्मा गांधी के अनुसार–

''शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य चरित्र निर्माण है''

स्वामी विवेकानन्द का मत था कि–

''ऐसी शिक्षा चाहिए जो चरित्र का निर्माण करें, मनुष्य को सशक्त बनाए तथा नैतिक जीवन के लिए प्रेरित करे।''

इन विचारों से स्पष्ट है कि शिक्षा और नैतिकता का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है।

नैतिक मूल्य की अवधारणा– नैतिक मूल्य वे सिद्धांत एवं आदर्श हैं जो व्यक्ति को उचित एवं अनुचित के मध्य अंतर समझने की क्षमता प्रदान करते हैं। ये मूल्य व्यक्ति के व्यवहार, निर्णय, सामाजिक संबंध तथा जीवन शैली को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

प्रमुख नैतिक मूल्य इस प्रकार है–

- सत्यनिष्ठा
- ईमानदारी
- अनुशासन
- करुणा
- सहिष्णुता
- न्यायप्रियता
- सेवा भावना
- सामाजिक उत्तरदायित्व
- पर्यावरण संरक्षण
- सहयोग एवं सद्भाव
- आत्मसंयम
- मानवता

उपर्युक्त ये सभी मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को संतुलित एवं समाजोपयोगी बनाते हैं।

आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के क्षरण का अर्थ– जब शिक्षा केवल अंक, परीक्षा, रोजगार तथा आर्थिक सफलता तक सीमित हो जाती है और चरित्र निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षा होने लगती है, तब इसे नैतिक मूल्यों का क्षरण कहा जाता है।

इसके प्रमुख संकेत निम्नलिखित हैं–

- परीक्षा में नकल की प्रवृत्ति

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

- साइबर अपराधों में वृद्धि
- शिक्षकों के प्रति सम्मान में कमी
- विद्यालयी अनुशासन का अभाव
- हिंसात्मक व्यवहार
- सामाजिक संवेदनशीलता में कमी
- बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण तनाव
- भ्रष्टाचार को सामान्य मान लेना
- व्यक्तिगत स्वार्थ की प्रवृत्ति

उपर्युक्त ये सभी परिस्थितियाँ शिक्षा के मूल उद्देश्य पर प्रश्नचिह्न लगाती हैं।

आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के क्षरण का प्रमुख कारण– आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों के ह्रास का संबंध केवल शिक्षा प्रणाली से नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा तकनीकी परिवर्तनों से भी है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ज्ञान एवं कौशल के विकास पर अधिक केंद्रित है, जबकि चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास अपेक्षाकृत उपेक्षित हो गए हैं। निम्नलिखित कारण इस समस्या को और अधिक गंभीर बनाते हैंकृ

1. उपभोक्तावादी संस्कृति– वर्तमान समय में सफलता का मूल्यांकन व्यक्ति के चरित्र के स्थान पर उसकी आर्थिक स्थिति, भौतिक सुविधाओं तथा सामाजिक प्रतिष्ठा से किया जाने लगा है। परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में ईमानदारी, संतोष और सेवा जैसे गुणों की अपेक्षा प्रतिस्पर्धा, स्वार्थ तथा प्रदर्शन की भावना विकसित होने लगती है। जब समाज स्वयं भौतिक उपलब्धियों को सर्वोच्च मानने लगे, तब नैतिक मूल्यों का क्षरण स्वाभाविक हो जाता है।

2. परीक्षा–केंद्रित शिक्षा प्रणाली– वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करना बन गया है। अधिकांश विद्यार्थी विषय की गहन समझ विकसित करने के स्थान पर केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने की तैयारी करते हैं। इससे रचनात्मकता, नैतिक चिंतन तथा सामाजिक संवेदनशीलता का पर्याप्त विकास नहीं हो पाता।

3. सोशल मीडिया और डिजिटल जीवन– डिजिटल युग ने ज्ञान प्राप्ति के अनेक अवसर प्रदान किए हैं, किंतु इसके साथ कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। सोशल मीडिया पर झूठी सूचनाएँ, साइबर बुलिंग, अशिष्ट भाषा, हिंसात्मक सामग्री तथा दिखावटी जीवनशैली का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर पड़ता है। अनेक विद्यार्थी वास्तविक सामाजिक संबंधों की अपेक्षा आभासी संसार में अधिक समय व्यतीत करते हैं, जिससे सहानुभूति, संवाद क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व प्रभावित होते हैं।

4. पारिवारिक परिवेश में परिवर्तन– परिवार नैतिक शिक्षा का प्रथम विद्यालय माना जाता है। वर्तमान समय में व्यस्त जीवनशैली, संयुक्त परिवारों का विघटन तथा माता–पिता के सीमित समय के कारण बच्चों को नैतिक संस्कार अपेक्षित रूप से प्राप्त नहीं हो पाते। अनेक परिवारों में नैतिक संवाद, प्रेरक कथाओं तथा अनुकरणीय व्यवहार का अभाव दिखाई देता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

5. आदर्श नेतृत्व की कमी– जब विद्यार्थी समाज में भ्रष्टाचार, हिंसा, असत्य तथा अनुचित साधनों से सफलता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों को सम्मानित होते देखते हैं, तब उनके मन में नैतिकता के प्रति भ्रम उत्पन्न हो सकता है। इसलिए समाज में आदर्श व्यक्तित्वों का अभाव भी नैतिक मूल्यों के क्षरण का एक महत्वपूर्ण कारण है।

नैतिक मूल्यों के क्षरण का विद्यार्थियों पर प्रभाव– नैतिक मूल्यों की कमी केवल व्यक्तिगत व्यवहार तक सीमित नहीं रहती, बल्कि इसका प्रभाव शिक्षा, समाज और राष्ट्र के विकास पर भी पड़ता है।

1. चरित्र निर्माण में बाधा– शिक्षा का उद्देश्य जिम्मेदार एवं संवेदनशील नागरिक तैयार करना है। यदि विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, अनुशासन और उत्तरदायित्व का विकास नहीं होता, तो उनका व्यक्तित्व अधूरा रह जाता है।

2. मानसिक तनाव एवं असंतोष– अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, तुलना तथा सफलता का दबाव विद्यार्थियों में तनाव, चिंता तथा अवसाद जैसी समस्याओं को जन्म देता है। नैतिक शिक्षा आत्मविश्वास, संतुलन तथा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक होती है।

3. अनुशासनहीनत– विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में बढ़ती हिंसा, नकल, दुर्व्यवहार तथा नियमों की अवहेलना नैतिक मूल्यों के कमजोर होने का संकेत है।

4. सामाजिक संवेदनशीलता में कमी– जब विद्यार्थियों में सहयोग, सेवा तथा सहानुभूति का विकास नहीं होता, तब समाज में सामाजिक एकता कमजोर होने लगती है। इससे पारस्परिक विश्वास एवं सहयोग की भावना भी घटती है।

5. भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति– यदि विद्यार्थी शिक्षा के दौरान ईमानदारी का महत्व नहीं सीखते, तो भविष्य में वे व्यक्तिगत लाभ के लिए अनैतिक साधनों का उपयोग करने में संकोच नहीं करते। इससे प्रशासन, व्यापार तथा अन्य क्षेत्रों में भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है।

शिक्षा में नैतिक मूल्यों की आवश्यकता– आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश अनेक कारणों से आवश्यक हैकृ

विद्यार्थियों के संतुलित व्यक्तित्व का विकास।

- लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा।
- सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ीकरण।
- भ्रष्टाचार एवं हिंसा में कमी।
- उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण।
- पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ मानवीय संवेदनाओं का विकास।
- वैश्विक नागरिकता एवं शांति की स्थापना।

उपर्युक्त नैतिक शिक्षा व्यक्ति को केवल सफल नहीं, बल्कि उत्तरदायी और संवेदनशील भी बनाती है।

आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के पुनर्स्थापन हेतु समाधान–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

1. मूल्य आधारित शिक्षा का समावेश– विद्यालयी एवं उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को केवल एक पृथक विषय के रूप में नहीं, बल्कि प्रत्येक विषय के साथ समन्वित रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। साहित्य, इतिहास, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान सभी विषयों में नैतिक दृष्टिकोण विकसित करने वाले उदाहरण सम्मिलित किए जा सकते हैं।

2. शिक्षक की आदर्श भूमिका– शिक्षक विद्यार्थियों के लिए सबसे प्रभावशाली प्रेरणा स्रोत होते हैं। उनका आचरण, अनुशासन, निष्पक्षता तथा ईमानदारी विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। इसलिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी नैतिक नेतृत्व को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।

3. विद्यालयी वातावरण– विद्यालय का वातावरण सहयोग, सम्मान, समानता तथा अनुशासन पर आधारित होना चाहिए। यदि विद्यालय स्वयं नैतिक मूल्यों का पालन करेगा, तो विद्यार्थी उन्हें व्यवहार में अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।

4. पारिवारिक सहभागिता– माता–पिता को बच्चों के साथ नियमित संवाद करना चाहिए। परिवार में सत्य, अनुशासन, सम्मान, सहयोग तथा सेवा की भावना का व्यवहारिक अभ्यास बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत सहायक होता है।

5. सामुदायिक सेवा कार्यक्रम– विद्यालयों में सामाजिक सेवा, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, रक्तदान जागरूकता, वृद्धाश्रम एवं अनाथालय भ्रमण जैसे कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। इससे विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व और करुणा का विकास होता है।

6. डिजिटल नैतिकता– वर्तमान समय में विद्यार्थियों को इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के सुरक्षित एवं जिम्मेदार उपयोग का प्रशिक्षण देना अत्यंत आवश्यक है। डिजिटल नागरिकता, साइबर सुरक्षा तथा ऑनलाइन व्यवहार के नैतिक सिद्धांतों को शिक्षा का अनिवार्य भाग बनाया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और नैतिक शिक्षा– नई शिक्षा व्यवस्था में समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, जीवन कौशल, संवैधानिक मूल्यों तथा भारतीय ज्ञान परंपरा पर विशेष बल दिया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा केवल रोजगार तक सीमित न रहकर चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास को भी महत्व देने की दिशा में आगे बढ़ रही है। विद्यालयों में कला, खेल, योग, सामुदायिक सेवा, परियोजना कार्य तथा सहयोगात्मक अधिगम जैसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के नैतिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

नैतिक मूल्यों के विकास हेतु व्यावहारिक सुझाव– आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन केवल सैद्धांतिक शिक्षा से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यवहारिक, संस्थागत तथा सामाजिक स्तर पर समन्वित प्रयास आवश्यक हैं। निम्नलिखित सुझाव इस दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं–

1. मूल्य–आधारित पाठ्यक्रम का विकास– विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, सहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व, पर्यावरण संरक्षण तथा लोकतांत्रिक मूल्यों से संबंधित विषयवस्तु को समुचित स्थान दिया जाना चाहिए। नैतिक शिक्षा को केवल एक पृथक विषय तक सीमित न रखकर प्रत्येक विषय के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

2. अनुभवात्मक अधिगम – नैतिक मूल्यों का विकास केवल पुस्तकीय ज्ञान से संभव नहीं है। विद्यार्थियों को सामुदायिक सेवा, स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, रक्तदान जागरूकता, ग्राम भ्रमण, वृद्धाश्रम एवं अनाथालयों में सेवा जैसी गतिविधियों में सहभागी बनाया जाना चाहिए। ऐसे अनुभव विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहयोग तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करते हैं।

3. शिक्षक प्रशिक्षण– शिक्षकों के लिए समय–समय पर नैतिक नेतृत्व, व्यावसायिक आचरण तथा मूल्य–आधारित शिक्षण पद्धतियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। शिक्षक का व्यक्तित्व स्वयं विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत होता है।

4. विद्यालय एवं विश्वविद्यालय का वातावरण– शैक्षणिक संस्थानों में अनुशासन, समानता, पारदर्शिता तथा लोकतांत्रिक वातावरण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को निर्णय–प्रक्रिया में उचित सहभागिता देकर उत्तरदायित्व की भावना विकसित की जा सकती है।

5. अभिभावकों की सक्रिय भूमिका– माता–पिता बच्चों के प्रथम शिक्षक होते हैं। परिवार में नैतिक वातावरण, अनुशासन, सम्मान, सहयोग तथा सत्यनिष्ठा का व्यवहार बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अभिभावकों एवं शिक्षकों के मध्य नियमित संवाद भी आवश्यक है।

6. डिजिटल साक्षरता एवं नैतिकता– आज के डिजिटल युग में विद्यार्थियों को इंटरनेट के सुरक्षित, जिम्मेदार एवं नैतिक उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। साइबर अपराध, फेक न्यूज, ऑनलाइन धोखाधड़ी तथा डिजिटल शिष्टाचार से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाने चाहिए।

7. भारतीय सांस्कृतिक एवं संवैधानिक मूल्यों का समावेश– भारतीय संविधान में वर्णित न्याय, स्वतंत्रता, समानता एवं बंधुत्व के आदर्शों को शिक्षा प्रक्रिया का अभिन्न भाग बनाया जाना चाहिए। साथ ही भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं में निहित सत्य, अहिंसा, सेवा, करुणा एवं सहिष्णुता जैसे मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

उपसंहार– आधुनिक शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल आर्थिक रूप से सक्षम नागरिक तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे उत्तरदायी, संवेदनशील एवं नैतिक व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो समाज, राष्ट्र तथा मानवता के कल्याण में सक्रिय भूमिका निभा सके। वर्तमान समय में तकनीकी विकास, वैश्वीकरण तथा तीव्र प्रतिस्पर्धा ने शिक्षा के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। यद्यपि इन परिवर्तनों ने ज्ञान एवं अवसरों का विस्तार किया है, किंतु इनके साथ नैतिक मूल्यों का संतुलन बनाए रखना भी उतना ही आवश्यक है। यदि शिक्षा केवल परीक्षा, अंक तथा रोजगार तक सीमित रह जाएगी, तो समाज में नैतिक संकट और गहरा होगा। इसलिए शिक्षा प्रणाली को पुनः मानवीय मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, लोकतांत्रिक आदर्शों तथा चरित्र निर्माण की दिशा में उन्मुख करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। नैतिक शिक्षा का उद्देश्य किसी विशेष विचारधारा का प्रचार करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में विवेक, संवेदनशीलता, ईमानदारी, न्यायप्रियता तथा उत्तरदायित्व जैसे सार्वभौमिक मानवीय गुणों का विकास करना है। जब विद्यालय, परिवार, समाज एवं शासन मिलकर इस दिशा में प्रयास करेंगे, तभी शिक्षा वास्तव में समग्र एवं सार्थक बन सकेगी।

अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन केवल एक शैक्षणिक आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य, सामाजिक शांति तथा मानव कल्याण की आधारशिला है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 06, June 2026

संदर्भ सूची–

भारतीय संविधान – प्रस्तावना एवं मूल कर्तव्य।

डॉ० कीर्ति वर्मा, मूल्यपरक शिक्षा – चिन्तन के विविध संदर्भ (2013), विकास प्रकाशन बर्रा, कानपुर।

दूबे, पी.एन. आधुनिक भारत में मूल्य शिक्षाः चुनौतियाँ और दिशा (2012), अकादमिक पब्लिशर्स, दिल्ली।

कोठारी शिक्षा आयोग (1964–66) की रिपोर्ट।

महात्मा गांधी (1937), बेसिक एजुकेशन

मूल्य शिक्षा एवं चरित्र निर्माण संबंधी शोध लेख।

National Coucil of Educational Research and Training 2005, National Curriculur Framwork, New Delhi

नैतिक शिक्षा एवं सामाजिक विकास से संबंधित समकालीन शोध–पत्र।

लाल रमन विहारी, भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, 1913, रस्तौगी पब्लिकेशन, मेरठ।

प्रो० रमन बिहारी लाल, पलोड़ सुनीता, भारत में शिक्षा प्रणाली का विकास और उसकी समस्याऐं 2017, आर०लाल बुक डिपो, मेरठ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार।